Dr. VISHWANATH SAH
Class – XII

(IV) Larynx :- यह सांसनली के ऊपर, उपास्थि (Cartilage) से बना होता है। यह देखने में बन्द संदूक की रचना की तरह होती है। इसका निर्माण चार प्रकार के उपास्थियों (cartilage) से बना होता है—

(i) Thyroid cartilage – इसकी संख्या एक होती है।
(ii) Aeretinoid cartilage – इसकी संख्या दो होती है।
(iii) Cricoid cartilage – इसकी संख्या एक होती है।

Fig:– Structure of Larynx

(V) सांसनली (Trachea and Bronchus) :

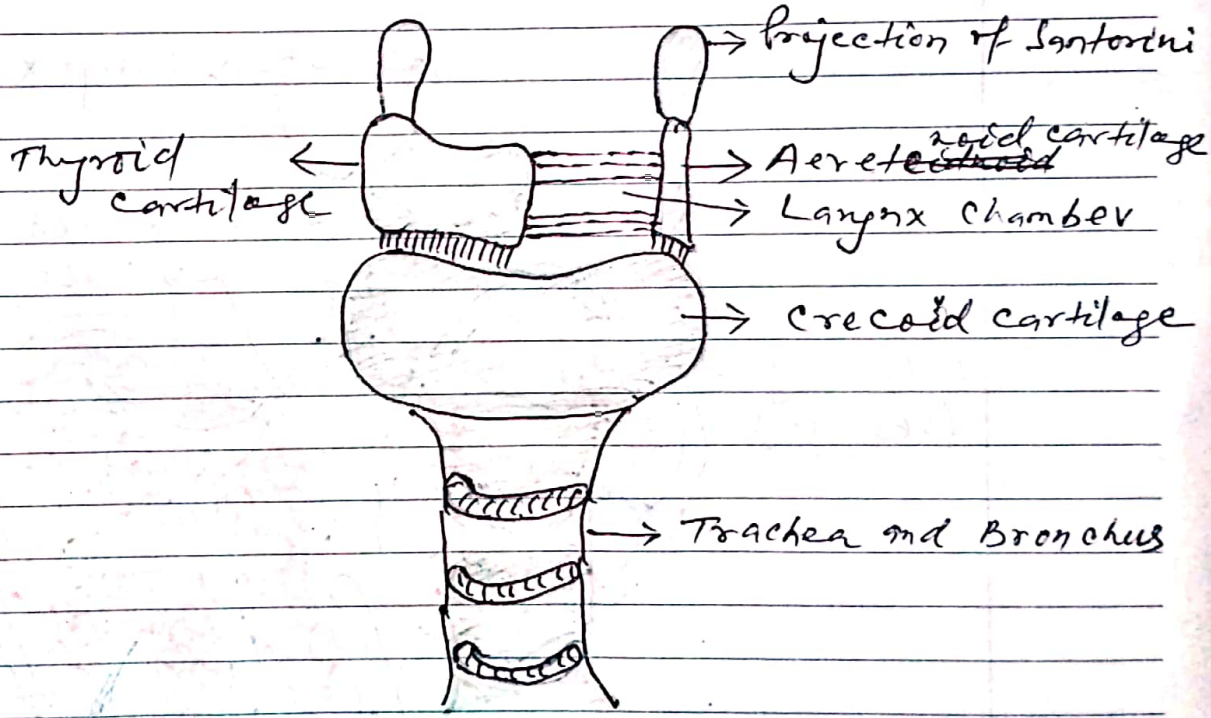

मानव के श्वसन तंत्र में कण्ठ से लगी हुई लम्बी बेलनाकार नलिका पायी जाती है, जिसे सांसनली कहते हैं। यह ग्रीवा भाग में से होकर वक्ष गुहा में 6वें वक्षीय कशेरुक (Vertebrae) तक फैली होती है। मानव

FEB 1999 1 Mon 2 Tue 3 Wed 4 Thu 5 Fri 6 Sat 7 Sun 8 Mon 9 Tue 10 Wed 11 Thu 12 Fri 13 Sat 14 Sun 15 Mon 16 Tue 17 Wed 18 Thu 19 Fri 20 Sat 21 Sun 22 Mon 23 Tue 24 Wed 25 Thu 26 Fri 27 Sat 28 Sun

Scanned by CamScanner

में इसकी लंबाई 12 cm तथा व्यास नर में 2.5 cm तथा मादा में 2 cm होता है। इसकी दीवार में "हायलीन छल्ले" पाये जाते हैं, जो "C" आकार के होते हैं। ये दीवार को पिचकने से रोकते हैं। श्वासनली की दीवार में भीतर से बाहर की ओर चार स्तर पाये जाते हैं—

(1) Mucosa, (2) Submucose (3) Cartilagenous layer
(4) Tunica Antivantacea layer

मौलिक श्वसनांग (Chief organs)

(1) फेफड़े (LUNGS):-

इसका निर्माण Endoderm कोशिकाओं से होती है। मानव में एक जोड़ा फेफड़े होते हैं, जो वक्ष गुहा में स्थित होता है। फेफड़े का रंग गुलाबी, सतह स्पन्जी एवं गुब्बारे के समान होता है। फेफड़े जिस गुहा में स्थित होते हैं, उसे Flural cavity कहा जाता है। दोनों फेफड़ों के चारों ओर फुफ्फुसावरण (pulmonary layer) होता है, जो द्विस्तरीय होता है। इसका बाहरी स्तर Parietal wall एवं भीतरी Visceral wall कहलाता है। दोनों स्तर के बीच तरल पदार्थ भरा होता है, जिसे Flural liquid कहते हैं। इसके द्वारा फेफड़ों के संकुचन व शिथिलता को नियमित बनाया जाता है। कभी-कभी मनुष्य में Flural fluid (liquid) का लाभ अनियमित हो जाता है जिससे श्वसन की क्रिया अवरुद्ध हो जाती है। इस रोग को Flurisi कहा जाता है।

मानव के दोनों फेफड़ों में अलग-अलग पिंड होते हैं।

Scanned by CamScanner